1. शब्दपरिचयः - I

(शब्द-परिचय-I)

उत्तरमाला

१. क. वह दरजी है।
ख. क्या वह बड़ा है।
ग. नहीं, वे दोनों खेत जोतते हैं।
घ. वे वृद्ध हैं।
ङ नहीं, ये दोनों जोर से भौंकते हैं।
च. ये दो कुत्ते हैं।
छ. क्या ये हरे रंग के हैं?
ज. ये थैले हैं।

२. क. सौचिकः वस्त्रं सीव्यति।
ख. न, शुनकौ उच्चैः बुक्कतः
ग. बलीवर्दौ न धावतः।
घ. नहि, स्यूताः नीलवर्णाः सन्ति।
ङ नहि, वृद्धाः हसन्ति।
च. बलीवर्दौ क्षेत्रं कर्षतः।
छ. शुनकौ बुक्कतः

३. क. स्यूताः
ख. वृद्धाः
ग. चषकः
घ. वस्त्रं
ङ शुनकौ

४. क. बलीवर्दौ
(i) दो बैल
ख. स्यूताः
(ii) थैले
ग. सीव्यति
(iii) सिलाई करता है।
घ. बुक्कतः
(iv) दो भौंकते हैं।
ङ हरितवर्णाः
(v) हरे रंग के

५. क. ते
ख. सः
ग. तौ
घ. ते
ङ. तौ
च. सः

६. क. सौचिकः
ख. मृगाः
ग. गायन्ति
घ. बुक्कतः
ङ. कर्षतः

७. क. प् + उ + स् + त् + अ + क् + अ + म्
ख. क् + ऋ + ष् + अ + क् + अः
ग. ब् + आ + ल् + अ + क् + अः
घ. म् + अ + य् + ऊ + र् + आः
ङ म् + ऊ + ष् + अ + क् + अः

2. शब्दपरिचयः - II

(शब्द-परिचय-II)

उत्तरमाला

१. क. झूला बगीचे में है।
ख. क्या ये दो कोयलें हैं?
ग. वे दोनों चालिकाएँ हैं।
घ. वे बकरियाँ हैं।
ङ घड़ी क्या सूचित करती है?
च. ये दोनों फुदक रही हैं।
ज. वे क्या कर रही हैं?

२. क. समयम् ख. उपवने ग. विहरतः
घ. चटके

३. क. दोला उपवने अस्ति। ख. घटिका समयं सूचयति।
ग. चटके विहरतः घ. आम्, स्थालिकाः गोलाकाराः।
ङ अजाः चरन्ति। च. चालिके वाहनं चालयतः।

४. क. सा ख. सा ग. ताः
घ. ते ङ ताः च. ते

५. क. बालिका ख. अजाः ग. बालकाः
घ. गायिका ङ अश्वौ

६. क. विहरतः ख. लिखति ग. पठति
घ. चलन्ति ङ गर्जति

७. क. विहरत (i) दो-फुदक रही हैं
ख. स्थालिका (ii) थालियाँ
ग. घटिका (iii) घड़ी
घ. दोला (iv) झूला
ङ. कोकिले (v) दो कोयल
च. अजाः (vi) बकरियाँ

3. शब्दपरिचयः - III

(शब्द-परिचय-III)

उत्तरमाला

१. क. यह कुदाल है। ख. वह विश्रामघर है। ग. वे दो बसें हैं।
घ. क्या ये मीठे हैं? ङ. ये रूमाल हैं।
च. वे मीठे और पोषक हैं। छ. ये तो नये हैं।

२. क. करवस्त्राणि। ख. अङ्गुलीयके।
ग. खनित्रम्। घ. बसयाने

३. क. बसयाने रेलस्थानकं गच्छतः। ख. सुवर्णकारः अङ्गुलीयके रचयति।
ग. आम्, तत् विश्रामगृहम् अस्ति। घ. आम्, कदलीफलानि मधुराणि पोषकाणि च सन्ति।
ङ. न, करवस्त्राणि नूतनानि सन्ति।

४. क. बालकाः पठन्ति। ख. एते याने। ग. बालिकाः गच्छन्ति।
घ. आम्रम् पतन्ति। ङ. एते पुष्पै विकसतः।

५. (अ) क. विश्रामगृहम् ख. बसयानम् ग. गच्छतः
घ. एतानि ङ. कमलम्

(ब) क. श् + र् + अ + म् + इ + क् + आ
ख. स् + उ + व् + अ + र् + ण् + अ + क् + आ + र् + अः

ग. र् + अ + च् + अ + य् + अ + त् + इ
घ. न् + ऊ + त् + अ + न् + आ + न् + इ
ङ. उ + प् + अ + न् + ए + त् + र् + अ + म्

६. क. एतानि ख. ते ग. तत्
घ. तानि ङ. तत् च. एतानि

७.

	खण्ड (क)		खण्ड (ख)
क.	भित्तिकम्	(i)	दीवार
ख.	गच्छतः	(ii)	दो जाते हैं
ग.	पुराणानि	(iii)	पुराने
घ.	खनित्रम्	(iv)	कुदाल
ङ.	अत्र	(v)	यहाँ
च.	कुत्र	(vi)	कहाँ

4. विद्यालयः
(विद्यालय)
उत्तरमाला

१. क. यहाँ छात्र, शिक्षक और शिक्षिकाएँ हैं। ख. यह कम्प्यूटर की प्रयोगशाला है।
ग. यह हमारे विद्यालय का उद्यान है। घ. तुम्हारी पुस्तकें कहाँ हैं?
ङ हम सब यहां खेलते और पढ़ते हैं। च. मैं भी यहीं पढ़ता हूँ। अब हम दोनों मित्र हैं।
छ. हम सब सभागार जाते हैं। ज. हम दोनों लिखते, पढ़ते, गाते और चित्र भी बनाते हैं।

२. क. सङ्गणकयन्त्राणि ख. उद्याने ग. सभागार
घ. गच्छन्ति ङ विद्यालयः

३. क. विद्यालये छात्राः शिक्षकाः शिक्षिकाः च सन्ति।
ख. आम, प्रणवः ऋचायाः विद्यालये पठति।
ग. 'आचार्ये! वयं गच्छामः' इति छात्राः कथयन्ति।
घ. छात्राः पुस्तकानि अत्र सन्ति।
ङ. न, छात्रौ श्लोकं गायावः।

४. क. आवां गच्छाव ख. वयं गायामः। ग. त्वं पठसि।
घ. मम विद्यालयः ङ. आवां खेलावः। च. यूयं पठथ।

५.

	विभक्तिः	वचनम्
क.	सप्तमी	एकवचनम्
ख.	सप्तमी	द्विवचनम्
ग.	षष्ठी	बहुवचनम्

घ. सप्तमी — एकवचनम्
ङ. प्रथमा — एकवचनम
छ. पञ्चमी — बहुवचनम्
च. प्रथमा — बहुवचनम्

६. क. पठथः ख. लिखामः ग. हसामि
घ. चलावः ङ खादसि च. क्रीडथ

७. क. ते ख. वयम् ग. अस्माकम्
घ. एतानि ङ. यूयम् च. ताः
छ. एतत्

८.

	शब्द	अर्थ
क.	इदानीम्	इस समय
ख.	अपि	भी
ग.	सङ्गणकम्	कम्प्यूटर
घ.	एव	ही
ङ.	शोभनम्	अच्छा
च.	मम	मेरा

5. वृक्षाः
(वृक्ष)
उत्तरमाला

१. क. वृक्ष वन की रचना करते हैं। ख. पक्षीगण शाखारूपी झूले पर बैठे हुए हैं।
ग. निरंतर हवा और पानी पीते हैं। घ. जलरूपी दर्पण में अपने प्रतिबिम्ब को देखते हैं।
ङ अपनी छायारूपी चादर को फैलाते हैं। च. सभी वृक्ष तपस्वी लोगों की तरह होते हैं।

२. क. विहगाः ख. पादैः
ग. वृक्षाः घ. स्वप्रति बिम्बम्

३. क. वृक्षाः स्वच्छाया संस्तरणं प्रसार्यं सत्कारं कुर्वन्ति।
ख. वृक्षा पवनं जलं च पिबन्ति।
ग. वृक्षा पादैः पातालं स्पृशन्ति।
घ. वृक्षाः शिरस्सुनभः वहन्ति।

४. क. निवसन्ति ख. गमिष्यति
ग. विकसन्ति घ. कूजतः

५. क. विहगाः (i) पक्षीगण
ख. सततम् (ii) लगातार

ग. नभः (iii) आकाश

घ. पादैः (iv) पैरों से

ङ. प्रसार्य (v) फैलाकर

च. सत्कारम् (vi) आदर-सत्कार

6. समुद्रतटः

(समुद्रतट) तृतीय-चतुर्थी विभक्ति

उत्तरमाला

१. क. उनमें से कुछ गेंद से खेलते हैं।

ख. बीच-बीच में तरंगें बालू के घर को बहा देती हैं।

ग. कोच्चि का तट नारियल के फलों के लिए जाना जाता है।

घ. समुद्र के तट केवल पर्यटन के स्थान नहीं हैं।

ङ. इन तीनों ही सागरों का कन्याकुमारी के तट पर मिलन होता है।

च. यहाँ मछुआरे भी अपने जीविका चलाते हैं।

२. क. पर्यटनाय ख. बालिकाः बालकाः ग. कन्दुकेन

घ. तरङ्गाः ङ. भारतदेशः

३. क. बालिकाः बालकाः च बालुकाभि बालुकागृहं रचयन्ति।

ख. जनाः नौकाभि जलविहारं कुर्वन्ति।

ग. चेन्नईनगरस्य मेरीना तटः देशस्य सागरटेषु दीर्घतमः।

घ. भारतस्य तिसृषु दिशासु समुद्रतटाः सन्ति।

ङ. भारतस्य पूर्वदिशायां बङ्गोपसागरः अस्ति।

च. त्रयाणाम् सागराणां सङ्गमः कन्याकुमारीतटे भवति।

छ. भारतस्य पश्चिमदिशायां अरबसागरः अस्ति।

४. **एकपदेन उत्तरत-**

क. समुदतटाः ख. विदेशिपर्यटकेभ्यः

पूर्णवाक्येन उत्तरत-

क. मुम्बईनगरस्य जनाः जुहूतटे स्वैरं विहरन्ति।

ख. कोच्चितटः नारिकेलफलेभ्यः ज्ञायते।

निर्देशानुसारम् उत्तरत-

क. सन्ति ख. अनेकः ग. षष्ठी

घ. विख्यातः

५. **(क)**

क. बसयाने ख. कलमेन ग. कन्दुकेन

घ. रामेण ङ. मुखेन

(ख)

क. पठनाय ख. पुत्राय ग. प्रकाशय

घ. बालकाय ङ. रामाय

६. क. केचन कुछ

ख. मत्स्यजीविनः मछुआरे

ग. बहवः बहुत

घ. समधिकम् बहुत ज्यादा

ङ. दीर्घतमः सबसे बड़ा

7. बकस्य प्रतीकारः

(बगुले का बदला) अव्यय प्रयोगः

उत्तरमाला

१. क. सियार के निमंत्रण से बगुला खुश हो गया।

ख. मैं भी इसके साथ (वैसा ही) बर्ताव करूँगा।

ग. बगुले के निमंत्रण से सियार प्रसन्न हो गया।

घ. सियार ने बगुले के साथ जैसा व्यवहार किया।

ङ. इसलिए बगुले ने सारी खीर खा ली।

च. अपने दुर्व्यवहार का फल दुःखदायी होता है।

२. क. बकः क्षीरोदनम् वञ्चितः।

ख. शृगालः बकस्य निमन्त्रणेन प्रसन्नः अभवत।

ग. शृगालः बकस्य निवासं भोजनाय अगच्छत।

घ. शृगाल कुटिलः आसीत्।

३. क. शृगालः सायं बकस्य निवासम् अगच्छत्।

ख. बकः अचिन्तयत् "यथा अनेन मया सहव्यवहारः कृतः तथा अहम् अपितेन सह व्यवहरिष्यामि।"

ग. शृगालः क्षीरोदनम् बकाय भोजनं अयच्छत्।

घ. बकः कलशात् चञ्च्वा क्षीरोदनम् अखादत्।

ङ. शृगालः सर्वक्षीरोदनम् अभक्षयत्।

४. **एकपदेन उत्तरत-**

क. मित्रता ख. वने

पूर्णवाक्येन उत्तरत-

क. शृगालः बकम् अवदत् – "मित्र! श्वः त्वं मया सह भोजनं कुरु।"

ख. शृगालस्य निमंत्रणेन बकः प्रसन्नः अभवत्।

निर्देशानुसारम् उत्तरत-

क. चतुर्थी ख. कुटिलस्वभावः ग. तथा

घ. बकः

५. क. प्रातः ख. सह ग. श्वः

घ. प्रति ङ. ह्यः।

६. **खण्ड (अ)** **खण्ड (ब)**

क. श्वः (i) ह्यः

ख. मया (ii) त्वया

ग. मित्रम् (iii) शत्रुः

घ. सायं (iv) प्रातः

ङ. कटिलः (v) सरलः

च. दुःखम् (vi) सुखम्

७. क. शृगालः प्रसन्न अवभवत्। ख. सः लेखं अलिखत्। ग. ते भोजनं खादन्तु

घ. युवां कुत्र अभ्रमतम्। ङ. अहं पुस्तकं पठतु।

८. **खण्ड (अ)** **खण्ड (ब)**

क. श्वः (i) आने वाला कल

ख. शृगालः (ii) सियार

ग. क्षीरोदनम् (iii) खीर

घ. चञ्च्वा (iv) चोंच

ङ. प्रतीकारम् (v) बदला

8. सूक्तिस्तबकः

(सूक्तियों का गुच्छा)

उत्तरमाला

१. क. उद्यम से ही कार्य पूरे होते हैं, इच्छा करने से नहीं।

ख. सोए हुए शेर के मुँह में पशु स्वयं प्रवेश नहीं करते हैं।

ग. प्रिय (मधुर) वचन बोलने से सभी जीव संतुष्ट हो जाते हैं।

घ. इसलिए प्रियवचन बोलने में कंजूसी नहीं करनी चाहिए।

२. क. उद्यमेन ख. जीवने ग. प्रियवाक्यप्रदानेन

घ. प्रियम्

३. क. मृगः सुप्तस्य सिंहस्य मुखेन प्रविशन्ति। ख. वचने दरिद्रता न कर्त्तव्यम्?

ग. मनोरथैः उद्यमेन न सिद्धं भवति। घ. पुस्तके पठितः पाठः जीवनेने न साधितः।

४. **अ. एकपदेन उत्तरत-**

क. पिपीलको ख. गरुड़ ग. योजनानां

घ. पिपीलको

पूर्णवाक्येन उत्तरत-

क. अगच्छन् वैनतेयः पदमेकं न गच्छति। ख. गच्छन पिपीलकः शतान्यपि योजनानां गच्छति।

निर्देशानुसारम् उत्तरत-

क. गच्छन् ख. वैनतेयः

ग. गम् धातुः, लट् लकार घ. आगच्छन्

ब. एकपदेन उत्तरत-

क. कृष्णः ख. कृष्णः ग. वसंतसमये

घ. पिककाकयोः

पूर्णवाक्येन उत्तरत-

क. काकः पिकः च कृष्णः वर्णस्य स्तः। ख. काकः काकः पिकः पिकः वसन्तसमये भवति।

निर्देशानुसारम् उत्तरत-

क. पिकः ख. कृष्णः

ग. श्वेतः घ. भवति

५. क. न ख. न ग. आम्

घ. आम् ङ. न

६. (i) मधुरवचनेन (ii) संतुष्टाः (iii) निर्धनता

(iv) मधुरम् (v) कोकिलः (vi) गच्छति

७.

	खण्ड (अ)		**खण्ड (ब)**
क.	याति	(i)	अयाति
ख.	प्रियम्	(ii)	अप्रियम्
ग.	एकम्	(iii)	अनेकम्
घ.	उद्यमः	(iv)	आलस्यम्
ङ.	कृष्ण	(v)	श्वेतः

८.

	खण्ड (अ)		**खण्ड (ब)**
क.	मृगाः	(i)	पशवः
ख.	उद्यमेन	(ii)	परिश्रमेण
ग.	याति	(iii)	जाता/जाती है
घ.	पिपीलकः	(iv)	नर चींटी
ङ.	सार्थकः	(v)	अर्थपूर्ण

9. क्रीडास्पर्धा

(खेल प्रतियोगिता) सर्वनाम प्रयोगः

उत्तरमाला

१. क. वहाँ खेल प्रतियोगिताएँ हैं। हम भी खेलेंगे।

ख. वहाँ लड़के और लड़कियाँ मिलकर खेलेंगे।
ग. वह किसी भी प्रतियोगिता में प्रतिभागी नहीं है।
घ. इसलिए हम सब प्रधानाचार्य से मिलते हैं।
ङ. यह कभी भी उचित नहीं है।
च. हुमा, क्या तुम नहीं खेल रही रहो?
छ. क्या प्रतियोगिताएँ केवल लड़कों के लिए ही हैं।
ज. क्या तुम सब एक ही दल में हो? या फिर अलग-अलग दल में?

२. क. विद्यालम् ख. फेकनः
ग. क्रीड़ाः घ. प्रबन्धस्य

३. क. नहि, बालिकाः अपि खेलिष्यन्ति। ख. पूरनः द्रष्टं न शक्नोति।
ग. विद्यालये अन्ययासमर्थानि पठनाय विशेषव्यवस्था वर्तते।
घ. विद्यालये अन्यथासमर्थानि क्रीडायै प्रबधः नास्ति।

४. क. वयं लिखामः। ख. तौ खेलतः।
ग. ताः अध्यापिकाः सन्ति। घ. अहं गच्छामि।
ङ. त्वं नृत्यसि। च. युवां क्रीडथः

५. क. बालकः भोजनं खादिष्यति। ख. अहं पुस्तकं पठिष्यामि।
ग. त्वं विद्यालयं गमिष्यसि। घ. छात्रा लेखं लिखष्यसि
ङ. बालिका संस्कृतं पठिष्यति।

६. (अ) **एकपदेन उत्तरत**-
क. हुमायै ख. हुमा

(ब) **पूर्णवाक्येन उत्तरत**-
क. पूरनः कस्यामपि स्पर्धायां प्रतिभागी नास्ति।
ख. विद्यालये कबड्डी, नियुद्धं, क्रिकेटं, पादकन्दुकं, हस्तकन्दुकं चतुरङ्गः इत्यादयः स्पर्धाः भविष्यन्ति

(स) **निर्देशानुसारम् उत्तरत**-
क. क्रीड् ख. अहम्

७.

खण्ड (अ)	**खण्ड (ब)**
क. सहभागिनी	(i) साथी
ख. रोचते	(ii) अच्छा लगता है।
ग. स्पर्धा	(iii) प्रतियोगिता
घ. द्रष्टुम्	(iv) देखने के लिए
ङ. समर्थः	(v) योग्य
च. अयम्	(vi) यह

10. कृषिकाः कर्मवीराः

(कर्मवीर किसान)

उत्तरमाला

१. क. गर्मी में शरीर पसीने से भरा हो, सर्दी में काँप रहा हो, तब भी हल और फावड़े से वे दोनों खेतों में खेती का काम करते रहते हैं।

ख. वे दोनों अद्‌भुत प्रकार के लोकपालक हैं, जो सबको साग (सब्जी), अनाज फल और दूध देकर स्वयं भूख और प्यास व्याकुल रहते हैं।

२. क. हलेन ख. सस्वेदं

ग. कृषिकाणाम् घ. कृषकः

३. क. कृषिकाणां गृहं वर्षासु वृष्टि वारियुतं न क्षमम्?

ख. कृषकाः शीतकालेऽपि कर्मठाः भवन्ति।

ग. कृषिकाणां सुखं दूरे तिष्ठति।

घ. कृषिकः शरीरे वसनानि न सन्ति।

ङ. शीतकाले अपि कृषिका कृषिको कर्मठौ स्तः।

४. क. पुरातनम् ख. सदनम् ग. कर्षकः

घ. धरा ङ. दिनकरः

५. क. जीर्णम् (i) नूतनम्

ख. शीते (ii) ग्रीष्मे

ग. सुखम् (iii) दुःखम्

घ. दूरे (iv) समीपे

ङ. सरसा (v) शुष्का

11. पुष्पोत्सवः

(फूलों का उत्सव)

उत्तरमाला

१. क. यह फूलवालों की सैर के नाम से प्रसिद्‌ध है।

ख. दिल्ली के मेहरौली क्षेत्र में अक्टूबर के महीने में इसका आयोजन होता है।

ग. यह उत्सव तीन दिन तक चलता है।

घ. पिछले दो सौ सालों से फूलवालों की सैर लोगों को आनंदित कर रही है।

ङ. फूलों की सैर आज भी उल्लास और उत्साह के साथ चलती है।

च. कहीं धार्मिक त्योहार होता है और कहीं वाहनों का त्योहार होता है।

२. क. उत्सवप्रियः ख. पुष्पोत्सवः ग. त्रयः
घ. भारतदेशः ङ. ऑक्टोबर्मासे

३. क. अन्यतमः पुष्पोत्सवः अस्ति।
ख. पशुत्सवः राजस्थानं भवति।
ग. 'फूलवालों की सैर उत्सवः दिवसत्रयं यावत् प्रचलति।
घ. पुषोत्सवः परम्परा मध्ये स्थगिता आसीत।
ङ. पुष्पोत्सवे पतङ्गानाम् उड्डयनम् विविधाः क्रीड़ाः मल्लयुद्धं चापि प्रचलति।

४. **एकपदेन उत्तरत**-
क. मेहरौली ख. पुष्पोत्सवः ग. पुष्पव्यजनानि
घ. आक्टोबर्मासे

पूर्णवाक्येन उत्तरत-
क. जनाः पुष्पनिर्मितानि व्यजनानि नयन्ति। ख. जनाः पुष्पव्यजनानि बख्तियारकाकी समाधिस्थले अर्पयन्ति।

निर्देशानुसारम् उत्तरत-
क. अत्र ख. षष्ठी विभक्ति

५. क. श्यामपट्टे ख. क्रीडाक्षेत्रे ग. वृक्षै
घ. पुष्पै ङ कक्षै च. सरोवरे

६. क. प्रमुखम् (i) आकर्षणम्
ख. बहुविधानि (ii) पुष्पाणि
ग. मनोहारिणी (iii) परम्परा
घ. पुष्पनिर्मितानि (iv) व्यजनानि
ङ. अस्मिन् (v) अवसरे
च. उत्सवप्रियः (vi) भारतदेशः

७. क. आम् ख. न ग. आम्
घ. न ङ. आम्

८. क. नाम्ना (i) नाम से
ख. अन्ये (ii) दूसरे
ग. पुष्पोत्सव (iii) फूलों का उत्सव
घ. अवसरे (iv) अवसर पर
ङ. स्थगित (v) बन्द हो गई थी

12. दशमः त्वम् असि

(दसवें तुम हो)

उत्तरमाला

१. क. उन्होंने देर तक नदी के पानी में स्नान किया।
ख. इसलिए उन्होंने निश्चित किया कि दसवाँ नदी में डूब गया।

ग. तब कोई यात्री वहाँ आया।

घ. बालकों के नेता ने कहा-हम दस बालक स्नान के लिए आए थे।

ङ. वहाँ दस बालक ही थे।

२. क. दश ख. दुखिताः ग. बालकाः

घ. पथिकः ङ. पथिकः

३. क. बालकानां नायकः अकथयत - 'वयं दश बालकाः स्नातुम् आगताः'।

ख. कश्चित् बालकः बालकानां संख्या नव अगणयत्।

ग. बालकाः निश्चयम् अकुर्वन् यत् दशमः नद्यां मग्नः।

घ. पथिकः बालकानां नायकः अगणयत।

ङ. पथिकः दुःखितान् बालकान् दृष्ट्वा अपृच्छत्।

च. प्रह्वष्टाः भूत्वा सर्वे गृहम् अगच्छन्।

४. **एकपदेन उत्तरत-**

क. दश ख. पारं ग. बालकाः

घ. स्नानाय

पूर्णवाक्येन उत्तरत-

क. बालकानां नायकः पथिकः अपृच्छत्। ख. पुनः अन्यान् बालकान् नव अगणयत्।

निर्देशानुसारम् लिखत-

क. सर्वे ख. बालकाः

ग. लङ् लकार, प्रथम पुरुष घ. चतुर्थी, बहुवचनम्

५. क. चतस्रः ख. दश ग. चत्वारि

घ. एकम् ङ. पञ्च

६. क. आम् ख. न ग. न

घ. न ङ. आम्

७. क. एकदा दश बालकाः स्नानाय नदीम् अगच्छन्।

ख. ते नदीजले चिरं स्नानम् अकुर्वन्। ग. ते निश्चयम् अकुर्वन् यत् दशमः नद्यां मग्नः।

घ. पथिकः तान् अगणयत्। ङ. दशमः त्वम् असि।

घ. सर्वे प्रसन्नाः भूत्वा गृहम् अगच्छन्।

८. क. श्रुत्वा (i) सुनकर

ख. प्रहृष्टा (ii) प्रसन्न

ग. चिरम् (iii) देर तक

घ. पथिक (iv) राहगीर

ङ. दृष्ट्वा (v) देखकर

13. विमानयानं रचयाम्

(आओ हवाईजहाज़ बनाएं)

उत्तरमाला

१. क. गगने — ख. विमानयानं

ग. हिमवन्तं सोपानम् — घ. कृषिकाणां

२. क. विमानयानं नीले गगने वायुविहारं करोति।

ख. विमानयानं बालकः बालिकाश्च रचयन्ति।

ग. वयं अम्बुदमालाम्–अम्बरभूषाम् आदाय एवं प्रतियाम।

घ. दुःखित–पीड़ित–कृषिकजनानां गृहेषु हर्षं जनयाम।

३. **एकपदेन उत्तरत–**

क. सुन्दरताराः — ख. गणयाम

पूर्णवाक्येन उत्तरत–

क. वयं ग्रहान् गणयाम। — ख. वयं ताराः चित्वा मौक्तिकहारं रचयाम।

निर्देशानुसारम् लिखत–

क. गुरुः+इति — ख. द्वितीया

४. क. हर्षः — (i) शोकः

ख. याम — (ii) प्रतियाम

ग. आदाय — (iii) दत्वा

घ. दुःखी — iv) सुखी

५. क. न — ख. आम् — ग. आम्

घ. न — ङ. आम्

६. क. क्रान्त्वा + आकाशम् — ख. शुक्रः + चन्द्रः — ग. सुन्दरताराः + चित्वा

घ. आदाम + एव

७.

मूलशब्दम्	विभक्तिः	वचनम्
क. गृह	सप्तमी	बहुवचनम्
ख. तारा	प्रथमा	एकवचनम्
ग. अम्बुदमाला	द्वितीया	एकवचनम्
घ. गगन	सप्तमी	एकवचनम्
ङ. ग्रह	द्वितीया	बहुवचनम्
च. हर्ष	द्वितीया	एकवचनम्

८. क. आदाय — (i) ग्रहीत्वा

ख. तुङ्गम् — (ii) उन्नतम्

ग. याम (iii) गच्छेम
घ. चित्वा (iv) विचित्य
ङ. गगने (v) आकाशे
च. विमले (vi) निर्मले

14. अहह आः च

(अहह और आह)

उत्तरमाला

१. क. वह स्वामी की सेवा में ही मग्न था।
ख. यह सुनकर अजीज दोनों चीजें लाने के लिए निकलता है।
ग. वह उसको कहती है- "मैं तुम्हें दोनों चीजें देती हूँ।"
घ. अजीज को देखकर स्वामी चकित था।
ङ. एक दूसरी मक्खी निकलती है।
च. स्वामी धीरे-धीरे पेटी खोलता है।

२. क. वस्तुद्वयम् ख. वृद्धा ग. प्रसन्नः
घ. स्वामी ङ. पेटीकाम्

३. क. पेटिकायां लघुपात्रद्वयम् आसीत्। ख. मधुमक्षिका हस्तं दशति।
ग. लघुपात्रात् मधुमक्षिका निर्गच्छति। घ. अन्या मधुमक्षिका ललाटे दशति।
ङ. पीड़ितः स्वामी अत्युच्चैः चीत्करोति। च. कुत्रचित् अजीजं एका वृद्धा मिलति।

४. **एकपदेन उत्तरत-**
क. परिश्रमी ख. स्वामी ग. गृहम
घ. चतुरः

पूर्णवाक्येन उत्तरत-
क. स्वामी चिन्तयति-'अजीजः इव न कोऽपि अन्यः कार्यकुशलः।'
ख. स्वामी अजीजं कथयति-'अहं तुभ्यम् अवकाशस्य वेतनस्य च सर्वं धनं दास्यामि।'

निर्देशानुसारम् लिखत-
क. अलसः ख. अजीजः ग. अहह आः च
घ. लङ्

५. क. दृष्ट्वा (i) अवलोक्य
ख. आकाशम् (ii) अम्बरम्
ग. परिश्रमी (iii) उद्यमी
घ. धरा (iv) मही
ङ. श्रुत्वा (v) आकर्ण्य
च. लीनः (vi) मग्नः

६. क. दूरे ख. अप्रसन्नः ग. गुरुः
घ. असफलः ङ. कठिनः च. अलसः

छ. मूर्खः

७. क. न ख. आम् ग. आम्
घ. न ङ. आम्

८. क. अजीजः सरलः परिश्रमी च आसीत्।
ख. अजीजः वस्तुद्वयम् आनेतुं निर्गच्छति।
ग. कुत्रचित् एका वृद्धा मिलति।
घ. प्रसन्नः सः स्वामिनः समीपे आगच्छति।
ङ. मधुमाक्षिका ललाटे दशति।
च. अजीजः सफलः आसीत्।

९. क. निर्गच्छति (i) निकलता है।
ख. पीडितः (ii) दुःखी
ग. व्यथाम् (iii) दुःख को
घ. आनय (iv) लाओ
ङ. चकित (v) हैरान
च. सहसा (vi) अचानक

15. मातुलचन्द्र!!

(चंदामामा)

उत्तरमाला

१. क. नीला आकाश अत्यधिक विशाल है। इसमें कहीं पर भी खाली जगह दिखाई नहीं देती है। हे चन्दामामा! कैसे चले जाओगे? हे चन्दामामा! कहाँ से आते हो?
ख. तुम्हारी चाँदनी का फैलाव सफ़ेद है। तुम्हारा यह सफ़ेद वस्त्र तारों से शोभित है। हे चन्दामामा! क्या यह सुन्दर वस्त्र मुझे दोगे? हे चन्दा मामा! कहाँ से आते हो?

२. क. चन्द्रः ख. स्नेहम् ग. तारकखचिताम्
घ. अतिशयविस्तृतेः ङ. धवलम्

३. क. मातुलचन्द्रः अतिशयविस्तृतः दृश्यते। ख. बालकाः मातुलचन्द्रं प्रश्नानि पृच्छन्ति।
ग. मातुलचन्द्रः बालकः गेहम् न आगच्छति। घ. चन्द्रिकावितानम धवलम् अस्ति।
ङ. तारकखचितं सितपरिधानम् अस्ति।

४. क. त्वरितमेहि मां (i) श्रावय गीतम्
ख. कुत आगच्छसि (ii) मातुलचन्द्र
ग. तारकखचितं (iii) सितपरिधानम्
घ. प्रियमातुल! (iv) वर्धय मे प्रीतिम्
ङ. अतिशयविस्तृत (v) नीलाकाशः

५. क. कुत्र ख. गेहम् ग. धवलम्
घ. श्रावय ङ. मह्यम्

व्याकरण

16. संस्कृत वर्णमाला

उत्तरमाला

१. क. वर्ण ख. एक ग. चार
घ. संयुक्त ङ. 25 च. ऊष्म
छ. व्यञ्जन ज. 4 झ. हल्
ञ. हलन्त

२. क. क्ष् ख. प्र ग. र्प
घ. स्र ङ. श्र च. र्य
छ. ज्ञ ज. द्य (द्य) झ. द्ध (द्ध)
ञ. क्र ट. त्र ठ. ह्न

३. क. कृषकः ख. विद्वान् ग. पत्रम्
घ. संस्कृतम् ङ. लक्ष्मी च. नासिका
छ. कपोतः ज. पठतः झ. जननी
ञ. उद्यानम्

४. क. न + ऋ + त् + य् + अ + त् + इ
ख. स् + व् + आ + ग् + अ + त् + अ + म्
ग. द् + ए + व् + आ + ल् + अ + य् + अ + म्
घ. भ् + अ + व् + अ + न् + त् + इ
ङ. ब् + आ + ल् + अ + क + अः
च. छ् + आ + त् + र् + आ
छ. भ् + अ + ग् + इ + न् + ई
ज. व् + इ + द् + य् + आ + ल् + अ + य् + अः
झ. क् + अ + प् + ओ + त् + अः
ञ. भ् + ओ + ज् + अ + न् + अ + म्

17. शब्दरूप-प्रकरणम्

उत्तरमाला

१. क. बालकात् ख. लताः ग. तस्य
घ. पुस्तकयोः ङ. वृक्षेभ्यः च. अजाय
छ. कासाम् ज. मित्रे झ. कवयः
ञ. मया

२. क. पुत्रेण ख. कलमेन ग. बालकम्
घ. माला ङ. वृक्षात् च. उद्याने
३. क. विद्यालयात् ख. मित्रेण ग. वृक्षस्य
घ. अश्वात् ङ. कन्दुकेन च. पुष्पाणि
४. क. पञ्चमी, एकवचन ख. पञ्चमी, एकवचन ग. तृतीया, एकवचन
घ. चतुर्थी, एकवचन ङ. चतुर्थी, एकवचन
च. पञ्चमी/षष्ठी, एकवचन छ. सप्तमी, बहुवचन ज. चतुर्थी, एकवचन
झ. तृतीया, बहुवचन ञ. सप्तमी, बहुवचन
५. क. प्रथमा (i) ने
ख. द्वितीया (ii) को
ग. तृतीया (iii) से (के द्वारा)
घ. चतुर्थी (iv) के लिए
ङ. पंचमी (v) से (अलग होना)
च. षष्ठी (vi) का, के, की, रा, रे, री
छ. सप्तमी (vii) में, पर

18. धातुरूप-प्रकरणम्

उत्तरमाला

१. क. चलथः ख. हसिष्यथ ग. आस्त
घ. लिखानि ङ. गमिष्यन्ति

२.	**धातुः**	**लकारः**	**पुरुषः**	**वचनम्**
क.	क्रीड्	लट्	प्रथमः	एकवचनम्
ख.	खाद्	लङ्	मध्यमः	द्विवचनम्
ग.	भक्ष्	लट्	प्रथमः	बहुवचनम्
घ.	प्रच्छ्	लोट्	प्रथमः	एकवचनम्
ङ.	नम्	लृट्	मध्यमः	बहुवचनम्
च.	पिब्	लट्	मध्यमः	द्विवचनम्
छ.	भू	लृट्	उत्तमा	बहुवचनम्
ज.	गम्	लट्	उत्तमः	बहुवचनम्

३. क. पठति ख. लिखन्ति ग. गमिष्यामि
घ. क्रीडति ङ. करोसि च. गच्छथ
छ. खादिष्यन्ति ज. भ्रमतः झ. अलिखत्
ञ. गच्छामः

४. क. सः (i) पठति
ख. अहम् (ii) वदामि
ग. वयम् (iii) लिखामः
घ. यूयम् (iv) क्रीडथ
ङ. तौ (v) वदतः
च. ताः (vi) हसन्ति
छ. युवाम् (vii) गच्छथः

वाक्यानि्

क. सः पठति ख. अहं वदामि। ग. वयं लिखामः।
घ. यूयं क्रीडथ। ङ. तौ वदतः। च. ताः हसन्ति।
छ. युवाम् गच्छथः।

५. क. सा (i) वह (स्त्री.)
ख. युवाम् (ii) तुम दोनों
ग. अहम् (iii) मैं
घ. वयम् (iv) हम सब
ङ. तौ (v) वे दो (पुं.)
च. त्वम् (vi) तुम
छ. आवाम् (vii) हम दोनों
ज. ताः (viii) वे सब (स्त्री.)
झ. यूयम् (ix) तुम सब
ञ. ते (x) वे दोनों (स्त्री.)

19. अव्ययपदानि

उत्तरमाला

१. क. अब ख. सब जगह ग. वैसे, और
घ. कहां से ङ. ही च. आने वाला कल
छ. आज ज. झूठ झ. पास में
ञ. पहले, प्राचीनकाल में

२. क. शनैः शनै ख. सह ग. श्वः
घ. च ङ. अद्य च. कदा
छ. पुरा ज. सर्वदा झ. अधुना
ञ. सर्वत्र

३. क. श्वः ख. कदा ग. उच्चैः
घ. अपि ङ. च च. तीव्रम्

20. संख्या

उत्तरमाला

१. क. पञ्च ख. सप्त ग. चत्वारः
घ. त्रयः ङ. द्वे च. एकम्
छ. द्वादश ज. अष्ट झ. पञ्चदश
ञ. दश

२. क. षट् ख. त्रयः ग. चत्वारः
घ. दश ङ. विंशति च. सप्त
छ. चत्वारि ज. चत्वारः झ. द्वादश
ञ. पञ्च

३. क. विंशतिः ख. द्वादश ग. पञ्चदश
घ. षट् ङ. अष्टादश च. चत्वारः
छ. सप्तदश ज. दश

21. अशुद्धि-संशोधनम्

उत्तरमाला

१. क. त्वं गृहं गच्छसि। ख. बालिका कलमेन लिखति।
ग. यूयं भोजनं खादथ। घ. रमेशः कन्दुकेन क्रीडति।
ङ. वृक्षात् फलानि पतन्ति। च. तौ विद्यालयं गच्छथः।
छ. बालिकाः पाठ पठन्ति। ज. सः गृहं न गच्छति।
झ. वयं लेखिकाः स्मः। ञ. ते पत्रं न लिखन्ति।

२. क. सः बालकः गच्छति। ख. ते बालकाः क्रीडन्ति।
ग. ते अश्वाः धावन्ति। घ. एतत् पुष्पं सुन्दरम् अस्ति।
ङ. ताः महिलाः हसन्ति। च. ताः बालिकाः गच्छन्ति।
छ. सा छात्रा विद्यालयं गच्छति। ज. सा बालिका कन्दुकेन क्रीडति।

३. क. रामः विद्यालयः गच्छति। ख. वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।
ग. माता पुत्राय दुग्धं यच्छति। घ. बालिका कलमेन लिखति।
ङ. मातुलः आपणात गृहम् आगच्छति। च. वृक्षस्य उपरि खगाः सन्ति।